International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नागार्जुन के काव्य में प्रतिरोध के स्वर

डॉ राजेन्द्र गंगाधरराव मालोकर

हिन्दी वभाग प्रमुख

श्री निकेतन आर्ट्स कॉमर्स कालेज, नागपुर (महाराष्ट्र)

सार:

नागार्जुन की क वता में संवेदना के व वध रूपों के बारे में बात की। देखा क संवेदना कतनी व वध है और जीवन के कतने सारे पक्ष उनकी क वता में अ भव्यक्ति पाते हैं। ले कन यह सब हुआ कैसे? यह सब संभव कैसे होता है? क वता बनती कैसे है? रचना- वधान का यही अर्थ है रचना का बनना। हम एक उदाहरण से इसे समझ सकते हैं जिस तरह कुम्हार (बर्तन बनाने वाला) म ी के एक लोंदे को चाक पर रखकर घुमाते संवारते उसे एक बर्तन या आकृति में बदल देता है, उसी तरह एक क व भी जीवन के टुकड़े को क वता में बदलता है। एक क व म ी की जगह शब्दों. का इस्तेमाल करता है। उसका माध्यम, उसकी सामग्री शब्द ही है। यानी भाषा। इन्हीं शब्दों से एक ढांचा तैयार होता है, एक रूप वही क वता की नि र्मति या वधा है। यानी भाषा में ही क वता संभव होती है। इस लए रचना- वधान को समझने के लए सबसे पहले हम क वता को शब्दशः पढ़ते हैं। एक- एक शब्द के ज़रिए पूरे निर्माण को समझने की को शश करते हैं।

मुख्य शब्द: नागार्जुन के काव्य, प्रगतिशील काव्यधारा, काव्य संवेदना

परिचय

नागार्जुन को प्रगतिशील काव्यधारा का आधार क व माना जाता है। नागार्जुन ने जीवन को उसके व वध रूपों में जटिल संघर्षों को, राजनीतिक वकृतियों को मजदूर आंदोलनों को कसान जीवन के सामान्य दुख-सुख को पहचानने और अ भव्यक्त करने का वृहत्तर सर्जनात्मक उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठाया है। जिस प्रकार उनकी काव्य संरचना और कथ्य के स्तर पर वै वध्य है, वैसा ही वै वध्यमय उनका जीवन भी रहा है। नागार्जुन की बात करते ही उनकी क वताएँ 'अकाल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

और उसके बाद बादल को घिरते देखा है' तथा 'का लदास सच सच बतलाना हठात ध्यान में आ जाती हैं। ले कन इन तीनों क वताओं की वषयवस्तु अलग-अलग है, इनका शल्प भी एक दूसरे से भन्न है और तीनों की संवेदना के भी अलग-अलग रंग हैं नागार्जुन के काव्य में संवेदना के इन्हीं भन्न- भन्न रूपों के माध्यम से हम उनके काव्य का अध्ययन इस इकाई में करेंगे। कसी भी वस्तु भाव और स्थिति के हृदय पर पड़े प्रभाव की प्रति क्रया ही संवेदना कहलाती है। नागार्जुन का काव्य संसार वै वध्यमय होने के साथ-साथ बहुत व्यापक एवं वराट है। इसमें प्रकृति मनुष्य, पशु राजनीतिक-सामाजिक जीवन, जीवन के मधुर एवं कोमल पक्ष, व्यंग्य की तीखी धार दैनन्दिन जीवन की गति व धयाँ सब शा मल हैं। नागार्जुन का यह वै वध्यमय संसार उनकी काव्य संवेदना का कस प्रकार हिस्सा बनता है,

अभी हमने कहा था क कसी भी वस्तु भाव या स्थिति का ह्रदय पर जो प्रभाव पड़ता है और उसकी जो प्रति क्रया होती है. उसे ही संवेदना कहते हैं। इस बात को दूसरे ढंग से भी समझा जा सकता है। आप जरा अपने आसपास नज़र डा लए। यह दुनिया कतनी बड़ी है और कतनी भरी-पूरी है। इसके इतने सारे रंग और रूप हैं। इतने सारे पदार्थ हैं, इतनी वस्तुएं हैं। प्रत्येक वस्तु प्रत्येक घटना हम पर कसी-न- कसी रूप में असर डालती है जैसे पानी में कंकड़ फेंकने से तरंग उठती है वैसे ही हम जब कुछ देखते-सुनते हैं या जब हमें कुछ होता है तो हम भी प्रति क्रया करते हैं। हमारा हृदय प्रभा वत होता है और तब उसी प्रभाव के अनुरूप भाव उत्पन्न होता है। वस्तुओं का हृदय पर पड़ने वाला यही प्रभाव और उससे उत्पन्न प्रति क्रया ही संवेदना कहलाती है। आदिक व वाल्मि क का वह प्र सद्ध प्रसंग तो आप जानते ही हैं, जब एक क्रौंच पक्षी की हत्या से आहत क व के मुँह से अनायास छंद फूट पड़ा था। यही संवेदना है। अंग्रेजी भाषा के क व शेक्सपीयर की प्र सद्ध उक्ति है ओ आइ हैव सफरड़ वद दोज हूग आइ सा सफर (मैं उनके दुख से दुखी हुआ जिन्हें मैंने दुख भोगते देखा। एक क व अत्यंत संवेदनशील होता है अर्थात् अ धक-से-अ धक वस्तुओं, स्थितियों, प्रसंगों का उस पर प्रभाव पड़ता है और वह उन पर अपनी प्रति क्रया व्यक्त करता है जो क व जितना बढ़ा होगा वह उतना ही अ धक संवेदनशील होगा यानी उसकी दुनिया भी बहुत बड़ी होगी और इसी लए उसके संवेदना के रूप भी बहुत होंगे। एक बड़ा क व प्रत्येक वस्तु प्रत्येक जीव से तादात्म्य अनुभव करता है 'मैंने उन सबके साथ दुख भोगा जिन्हें दुख भोगते देखा। नागार्जुन ने अपनी एक क वता 'प्रतिबद्ध हूँ' में इसे बहुत बढ़िया ढंग से व्यक्त कया है :

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संबद्ध हूँ जी हाँ संबद्ध है

संचर-अचर सृष्टि से

शीत से, ताप से, धूप से, हिमपात से

आवद्ध हूँ जी हाँ, आबद्ध हूँ

स्वजन परिजन के प्यार की डोर में

प्रयजन के पलकों की कोर में

तीसरी चौथी पीढ़ियों के दंतुरित शशु-सुलभ हास में

आप इस पूरी क वता को पढ़िए तो पता चलेगा क जीवन के कतने सारे पक्ष क व को संवेदित करते है। जितनी तरह के पक्ष हैं, जितनी तरह के प्रसंग है उतनी तरह की संवेदनाएं भी हैं।

संवदेना के व वध रूप

संवेदना के भन्न-भन्न रूपों पर बात करने से पहले सबसे पहली बात जो हम हमेशा ध्यान में रखें वह यह क कोई भी बात हवा में नहीं हो सकती। कहने का मतलब यह क जब हम कसी क व के बारे में बात कर रहे हैं तो उसकी क वता को सामने रखना पड़ेगा। क वता के एक-एक शब्द को पढ़ना, समझना पड़ेगा। ले कन यहाँ कुछ और बातें भी ध्यान में रखना ज़रूरी है। जैसे क आप जानते ही होंगे क नागार्जुन बिहार प्रांत के म थला क्षेत्र के रहने वाले हैं। उनकी मातृभाषा मै थली है। उन्होंने मै थली मैं भी अनेक क वताएँ लखी हैं। साहित्य अकादमी पुरस्कार उन्हें मै थली क वता संग्रह 'पत्रहीन नम्न गाछ' पर ही मला है। संस्कृत पर भी उनका सहज अ धकार है। उन्होंने संस्कृत में भी क वताएँ लखी हैं और 'युगधारा' की भू मका के अनुसार 'क वत्व का आरं भक उन्मेष संस्कृत के माध्यम से हुआ। नागार्जुन को म थला के ग्राम जीवन का गहरा आत्मीय अनुभव तो है ही, सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप के जीवन का भी वस्तृत अनुभव है। उनका मै थली उपनाम 'यात्री' है जो अकारण नहीं है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नागार्जुन लगातार यात्रा करते रहे हैं। सुदूर श्रीलंका से लेकर तिब्बत तक, काश्मीर से काठियावाड़ तक इस प्रकार यह सम्पूर्ण भारतीय भूभाग उनकी क वता में है म थला के रु चर भू-भाग' से लेकर 'मुलुंड' और' वतस्ता', 'अमल धवल गरि के शखरों से लेकर 'मानसरोवर के स्व र्णम कमलों तक एक बात और नागार्जुन तो प्रगतिवादी हैं, मार्क्सवादी, कसान सभा के आंदोलनों से लेकर सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन और अनेक अन्य आंदोलनों में उन्होंने भाग लया है, लाठियों खायी हैं, जेल गये हैं और इन सबकी छाप भी उनकी क वता पर भीतर तक है। साथ-साथ यह भी याद रखना जरूरी हैं क नागार्जुन पहले बौद्ध धर्म में दी क्षत होकर वैद्यनाथ मश्र से नागार्जुन बने, फर गृहस्थ बनकर मार्क्सवादी भी बन गए। इस प्रकार ये दो दर्शन-परंपराओं, भारतीय बौद्ध दर्शन तथा पाश्चात्य मार्क्सवादी दर्शन से घनिष्ठ रूप से संबद्ध रहे। तो यह है नागार्जुन का जीवन पटल आप पूछ सकते हैं, क्या संवेदना के रूपों को समझने के लए कसी क व के जीवन के बारे में जानकारी जरूरी है! बिना जाने भी तो हम पढ़ सकते हैं। सो तो ठीक है, ले कन कुछ बातें कुछ मोटी-मोटी बातें अगर हम क व के बारे में जान सकें तो समझने में सु वधा जरूर होगी। जैसे यही बात क नागार्जुन ने इतनी सारी राजनीतिक क वताएँ क्यों लखी? स्पष्ट है क वह एक स क्रय राजनीतिक कार्यकर्ता भी रहे, इसी लए नागार्जुन के जीवन का

जो वस्तार है वह उनकी क वता में भी मलता है। उनकी क वता जीवन संकुल, गहन और भरी-पूरी है। इस लए उनकी चेतना का स्वरूप भी अत्यंत व्यापक है, जिसे हम कुछ शीर्षकों में वभक्त कर आसानी से समझ सकते हैं।

उद्देश्य

1. नागार्जुन के काव्य में प्रतिरोध के स्वर व वध रूपों के बारे में बात की।
2. नागार्जुन को प्रगतिशील काव्यधारा का आधार क व माना जाता है।

प्रकृति संसार

कहा जाता है क कोई भी व्यक्ति एक बच्चा भी सबसे पहला चत्र प्रकृति का बनाता है और सबसे पहली क वता भी प्रकृति पर ही लखता है पता नहीं यह बात कहाँ तक रूम है। वैसे आप चाहें तो कुछ क वयों को चुन लें और उनको पढ़ कर पता लगाएं क क्या यह बात सही है। आप चाहें तो बच्चों के बनाए चत्रों को भी देख सकते हैं। सबके बारे में यह बात सच हो या न हो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ले कन नागार्जुन के बारे में इतना तय है क उनकी क वता का एक बहुत बड़ा भाग प्रकृति-नि र्मत तथा उनकी क वताओं का एक अपरिहार्य संवेग प्रकृतिजन्य है। प्रकृति के असंख्य कर्मा ने नागार्जुन को तीव्रता से संवेदित कया है। उनके पहले क वता संग्रह 'युगधारा' में एक क वता है।

'रजनीगंधा'

तुम खल रात की रानी

हो ग्लान भले वह जीवन और जवानी

तुम खल रात की रानी।'

प्रहरी-परिवेष्टित इस बंदीशाला में

मैं स सही, पर ताजी रहे कहानी

तुम खलरात की रानी!

यहप्रहरी के बूटों की कर्कश

यह कह कर बहुत नींद तोड़ जाती हैं

आँखें खुलती तो बसझुंझला उठता हूँ.

इतने में अनुपम सुवास से सुर भत

शीतल समीर का हल्का का आता

सारे अभाव अ भयोग भूल जाता हूँ

या आकुल मग इतना प्रमुदित हो जाता

जय हो जय हो कल्याणी ।

मनुष्य और पशु

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रायः प्रकृति चत्रण का अर्थ होता है पेड़-पौधों, हवा, बादल, पहाड़-समुद्र, सूर्य-चंद्रमा तारों का चत्रण। ले कन पशु भी इसी प्रकृति के अंग हैं, यह बात अक्सर भुला दी जाती है जब से मनुष्य है. तभी से पशु हैं उसके साथ, और जिस तरह पेड़-पौधों, पहाड़, समुद्र ने मनुष्य की चेतना को प्रभा वत कया है वैसे ही जानवरों ने भी वश्व साहित्य की कुछ दुर्लभ कृतियाँ मनुष्य और पशु के संबंधों के बारे में हैं, जैसे तॉल्सतॉय की मशहूर कहानी 'यार्डस्टिक' जो एक घोड़े की और उसके माध्यम से मनुष्य की कहानी है। क्या आप उस प्र सद्ध हिंदी कहानी का नाम बता सकते हैं जिसमें एक कुत्ता भी, मनुष्य की तरह ही एक महत्वपूर्ण पात्र है और लेखक की संवेदना का संवाहक ?

नागार्जुन की क वता में जानवर भी संवेदना जगाते हैं और नागार्जुन ने बहुत मा र्मकता से उनका अंकन कया है। प्रायः हर जगह जानवर और आदमी का जीवन सम्मि लत रूप से आता है जैसे प्र सद्ध क वता 'अकाल और उसके बाद' में या 'नेवला' में ले कन हम उस क वता को लें जिसके बिना नागार्जुन के काव्य के सार को समझना कठिन है।

नागार्जुन के काव्य में संवेदना के रूप

'पैने दाँतों वाली'

धूप में पसरकर लेटी है

मोटी तगड़ी, अधेड़, मादा सूअर.....

जमना- कनारे मखमली दूबों पर

पूस की गुनगुनी धूप में पसरकर लेटी है

यह भी तो मादरे-हिंद की बेटी है

भूरे भूरे बारह थंनों वाली!

ले कन अभी इस वक्त छीनों को पला रही है

दूध मन- मजाज ठीक है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

कर रही है आराम

अखरती नहीं है भरे-पूरे थनों की खींच-तान

दुधमुँहे छीनों की रग-रग में

मचल रही है आ खर माँ की ही तो जान!

जमना - कनारे मखमली दूबों पर

पसर कर लेटी है

यह भी तो मादरे-हिंद की बेटी है!

पैने दाँतों वाली.....

दैनन्दिन जीवन

जैसा क हमने अभी देखा, नागार्जुन के लए जीवन का प्रत्येक कण प वत्र है और क वता का सहज स्वाभा वक अवलम्ब । जब 'नेवला' या 'मादा सूअर उनकी संवेदना को झकझोर सकती है तो फर 'थाना धमदाहा, बस्ती रूपउली' का प्राइमरी स्कूल मास्टर या 'खुरदुरे पैरवाला रिक्शावाला या 'नगधड़ंग छोकरा क्यों नहीं? जीवन के तलछट कहे जाने वाले गरीब-गुरबों का जीवन नागार्जुन के हृदय को द्र वत कर देता है। बड़ी वकलता से नागार्जुन दैनंदिन जीवन के कार्य-व्यापारों का और गरीबी का चत्रण करते हैं। घर में बच्चा बीमार है और गृहिणी फटी दरी पर बैठ कर चावल चुन रही है। फर बच्चे की दंतुरित मुस्कान है जो 'मृतक में भी डाल देगी जान' बस ड्राइवर की सीट के सामने उसकी बिटिया ने टॉंग दी हैं अपनी गुलाबी चू ड़याँ जो पूरे सफर में ड्राइवर की साथी हैं' और स्नेह-पाथेय | और बैलाडीला वाली सड़क पर दंतेवाड़ा से 55 कलोमीटर आगे शालवानों के नि वड़ टापू में खोता हुआ अधेड़ मा ड़या है। तो, आप देख रहे हैं क नागार्जुन को कतनी छोटी-छोटी बातें और चीजें रोक लेती हैं, अपनी तरफ खींचती हैं और इन छोटी-छोटी बातों से उनकी सम्पूर्ण जीवन दृष्टि बनती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

एक क वता हम लें इन सलाखों से टिका कर भाल पहले क वता को ध्यान से पढ़िए। फर इन सवालों पर वचार कीजिए:

'इन सलाखों से टिका कर भाल

इन सलाखों से टिकाकर भाल

सोचता ही रहूंगा चरकाल

और भी तो पकेंगे कुछ बाल

जाने कसकी/ जाने कसकी

और भी तो गलेगी कुछ दाल

न टपकेगी क उनकी राल

चाँद पूछेगा न दिल का हाल

सामने आकर करेगा वो न एक सवाल

मैं सलाखों में टिकाए भाल

सोचता ही रहूंगा चरकाल ।

संवेदना की जटिलता कुछ और पक्ष

अब हम तीन ऐसी क वताओं को लें जो एक दूसरे से बिल्कुल भन्न हैं, जो नागार्जुन काव्य की शखर उपलब्धियों में गनी जाती हैं। अब तक हमने देखा क कैसे जीवन के व भन्न पक्ष नागार्जुन को संवेदित करते हैं और नागार्जुन की क वताएँ उन्हीं संवेदनों का व वध प्रकाश है। कई बार संवेदना एकरेखीय होती यानी एक क वता में एक ही तरह की संवेदना व्यक्त है, जैसे प्रेम की क वता है तो केवल प्रेम के ही संवेग मलते हैं। ले कन अब जो क वताएँ हम ले रहे हैं उनमें संवेदना का जटिल रूप देखने को मलता है। क वताएँ हैं 'उनको प्रणाम', 'मंत्र' और 'चन्दू

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मैंने सपना देखा' रघुवीर सहाय को 'उनको प्रणाम' क वता बहुत प्रय थी और केदारनाथ संह को 'मंत्र' बहुत प्रय है। आप इन तीनों क वताओं को पढ़ें और निम्न ल खत प्रश्नों के उत्तर दें।

'उनको प्रणाम'

जो नहीं हो सके पूर्ण काम

में उनको करता हूँ प्रणाम ।

कुछ युक्ति कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट

जिनके अ भमंत्रित तीर हुए.

रणकी समाप्ति के पहले ही

जो वीर रिकुलर हुए

उनको प्रणाम!

जो छोटी-सी नैया लेकर

उतरे करने को व-पार

मन में हो रही स्वयं

हो गये उसी में निराकार!

- उनको

प्रणाम!

निष्कर्ष

हमने नागार्जुन के काव्य में संवेदना के व भन्न रूपों की चर्चा की एक क व जो कुछ देखता - सुनता, ग्रहण करता है सबका उस परप्रभाव पड़ता है। उसके मन पर सबकी छाप पड़ती है। वह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

हर चोट से झंकृत होता है उसकी कुछ न कुछ प्रति क्रया होती है। वह दुखी होता है, खुश होता है। वस्मय, रोमांच, भय सबकी अनुभूति उसे होती है वह हँसता भी है। क्रुद्ध भी होता है। आक्रमण भी करता है। ये सारे भाव उसमें उत्पन्न होते हैं। बाह्य जगत के संपर्क से उसमें जो कुछ घटित होता है उसे ही संवेदना कहते हैं। जो क व जितना अ धक संवेदित होता है अर्थात् संवेदनशील होता है वह उतना ही बड़ा होता है। नागार्जुन की क वता में अनेक संवेदन मलते हैं। जीवन के अनेक रूप तथा स्थितियाँ पशु-पक्षी हवा- पानी, खेत बगीचे, नदी-पहाड़, बादल, मानव जीवन बचपन- जवानी, नारी-सौंदर्य, राजनीति, क्रांति, वद्रोह संघर्ष, आकांक्षा, आशा-निराशा, जय-पराजय, राग- वराग, सब कुछ है यहाँ । इनमें संवेदना के अनेक धरातल मलते हैं। यही नागार्जुन की श्रेष्ठता है। यही उनकी क वता की शक्ति है। नागार्जुन न तो सर्फ व्यंग्यकार हैं, न सर्फ राजनीतिक क व, न सर्फ बादलों के क व नागार्जुन सम्पूर्ण जीवन के क व हैं।

संदर्भ

1. नागार्जुन, लाल भवानी उद्धृत नागार्जुन चुनी हुई रचनाएं भाग 2 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्र०सं० 1985 पृष्ठ 59
2. नागार्जुन प्रतिहिंसा ही स्थायीभाव है, उद्घृत नागार्जुन चुनी हुई रचनाएं भाग 2 वाणी प्रकाशन दिल्ली प्र0 सं0 1985 पृष्ठ 257
3. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 13
4. नागार्जुन : क व और कथाकार सत्यनारायण, भू मका 3. उपन्यासकार नागार्जुन बाबूराम गुप्त, पृष्ठ क्र. 1
5. नागार्जुन जीवन और साहित्यप्रकाशचंद्र भ , पृष्ठ क्र. 19
6. नागार्जुन जीवन और साहित्यप्रकाशचंद्र भ , पृष्ठ क्र. 20
7. नागार्जुन जीवन और साहित्य 7. नागार्जुन: क व और कथाकार
8. नागार्जुन : जीवन और साहित्य 9. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 13 10. रत्नगर्भ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 17
9. बलचनमा - नागार्जुन प्रकाशचंद्र भ , पृष्ठ क्र. 22 सत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 6
10. नागार्जुन जीवन और साहित्य प्रकाशचंद्र भ , पृष्ठ क्र. 26प्रकाशचंद्र भ , पृष्ठ क्र. 25 सत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 9

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 12, December - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

11. नागार्जुन जीवन और साहित्य प्रकाशचंद्र भ , पृष्ठ क्र. 38 15. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 19
12. नागार्जुन : क व और कथाकारसत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 5
13. नागार्जुन : क व और कथाकारसत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 5
14. नागार्जुन: क व और कथाकारसत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 18
15. नागार्जुन की क वताअजय तिवारी, पृष्ठ क्र. 28
16. नागार्जुन की क वता अजय तिवारी, पृष्ठ क्र. 18